CYAR.Yal - 4

स्नातक तृतीय खंड

मैथिली कथा साहित्यक विकास

मैथिली कथा साहित्यक विकसित परम्पराक विवेचन सँ पूर्व एहि तथ्यक अन्वेषण आवश्यक जे मौलिक कथाक रूपमे प्रथम मैथिली कथा कोन अछि। मोहिनी मोहन, मदनराज चरित उपन्यास, श्री शंकर विवाह, ताराक वैधव्य, भीषण अन्याय, मनुष्यक मोल, अदलाक बदला, अकिञ्चन, चन्द्रप्रभा प्रभृति कथा मैथिलीक प्रथम कथाक रूपमे विभिन्न विद्वानक मध्य चर्चित अछि। एहि सभ कथामे भिन्नताक सभसँ पैघ कारण ई भेल जे जखन मैथिली कथा साहित्यक मौलिक परम्परा प्रारम्भ भेल तखन कथा आ उपन्यासक फराक परिभाषा नहि कएल गेल छल। मैथिली कथा साहित्यक आरम्भिक अवधि (1905) सँ दू-तीन दशक बाद (1920-30) रचित 'गल्प' केँ विद्वान साहित्यकार लोकनि 'कथा' आ 'उपन्यास' विधामे बाँटय के प्रयास कयलनि। एहि अवधिमे कतेको एहन कथा लिखल गेल जाहिमे उपन्यास शब्दक प्रयोग भेल।

अनुसंधान निरंतर चलैत रहल। विद्वान इतिहासकार लोकनि प्रथम कथा पर अनुसंधान चलैत रहल। मैथिलीमे प्रथम

कथाक प्रसंग अवधिक प्रशस्त विचार डॉ० रामदेव झा के मान्य होता सभसँ पहिने रामदेव बाबू जनार्दन झा 'जनसीदनक' ताराक वैधव्य (१९०४) कैं मैथिलीक पहिल कथा मानल गेल। हिनकहि तर्कक आधार मानि अन्यान्य इतिहासकार-साहित्यकार लोकनि ताराक वैधव्यकैं आरम्भक कथा मानलनि। पश्चात् अनुसंधानकें आगाँ बढ़बैत डॉ० रामदेव झा अपन नव शोधक द्वारा जलधर झाक 'विलक्षण दाम्पत्य' कैं प्रथम कथाक रूपमे प्रमाणित कयलनि — "एहि प्रकारक कतो लेख सामग्री अस्थाय पर ओकरा प्रकीर्णक (मिसलेनियस) कालममे छापि देल जाइत छल। मैथिली ~~साहित्य~~ हित साधनक दोसर वर्ष अर्थात् 1906 ई० मे प्रकीर्ण स्तम्भ मे जलधर झा लिखित 'विलक्षण दाम्पत्य' शीर्षकसँ एक गोट रच्य गद्य रचना प्रकाशित भेल छल। आधुनिक मैथिली कथा साहित्यक उदय संकेत मानल जाए सकैत अछि"। डॉ० रामदेव झाक मन्तव्य कैं यदि तथ्यपूर्ण मानल जाए तँ आब विलक्षण दाम्पत्य मैथिलीक प्रथम मौलिक कथा होएत।

क्रमशः

डॉ० पंकज कुमार
अतिथि शिक्षक